भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 195
2 फरवरी, 2022 को उत्तर दिए जाने के लिए

तटीय क्षेत्रों का जलमग्न होना

195. श्री अनुभव मोहंती :

क्या पृथ्वी विज्ञान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार ने यह निर्धारित करने के लिए अनुसंधान/अध्ययन किए हैं कि क्या निकट भविष्य में या आने वाले दशकों में भारत के किसी विशाल तटीय क्षेत्र के जलमग्न होने का खतरा है; और

(ख) यदि हां, तो उन तटीय क्षेत्रों का ब्यौरा क्या है जिनके इस तरह से जलमग्न होने का खतरा है और ऐसे खतरों से निपटने के लिए सरकार द्वारा क्या कदम उठाए गए हैं/उठाए जाने का प्रस्ताव है?

उत्तर
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
(डॉ. जितेंद्र सिंह)

(क) जी, हां। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के स्वायत्तशासी संस्थान, भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केन्द्र (इंकॉइस) ने समुद्री स्तर में वृद्धि, तटीय अपक्षरण, तटरेखा परिवर्तन दर, तटीय उत्थापन, तटीय भूआकृतिविज्ञान, ज्वारीय रेंज, तथा महत्वपूर्ण लहर ऊंचाई सम्बन्धी डेटा का प्रयोग करते हुए 1:100000 पैमाने पर भारत की समग्र तटरेखा हेतु तटवर्ती सुभेद्यशीलता सूचकांक (CVI) मानचित्र का एक एटलस तैयार करके प्रकाशित किया है। इसके अतिरिक्त, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय का एक संबद्ध कार्यालय, राष्ट्रीय तटीय अनुसंधान केन्द्र (एनसीसीआर), चेन्नई सैटेलाइट इमेजेज का प्रयोग करते हुए भारतीय तट पर तटरेखा परिवर्तनों की मॉनिटरिंग कर रहा है। एनसीसीआर द्वारा किए गए 28 वर्षों, अर्थात (1990-2018), के सैटेलाइट डेटा का अध्ययन दर्शाता है कि 33.6 % भारतीय तटों का क्षरण हो रहा है, जिसके परिवर्तन की दर अलग-अलग है।

(ख) किए गए अध्ययनों के आधार पर प्रत्येक राज्य में अत्यधिक उच्च CVI के अन्तर्गत रिकॉर्ड किए गए तटों की लम्बाई तथा राज्य की कुल तटरेखा के सदंर्भ में उनके प्रतिशत का विवरण नीचे दिया गया है:

राज्य / क्षेत्र	बहुत उच्च CVI श्रेणी के अन्तर्गत तटरेखा	
	लंबाई (किमी)	कुल तटरेखा का प्रतिशत
गुजरात	124	5.36
महाराष्ट्र	11	1.22
कर्नाटक एवं गोवा	48	9.54
केरल	15	2.39
तमिलनाडु	65	6.38
आंध्र प्रदेश	6	0.55
ओडिशा	37	7.51
पश्चिम बंगाल	49	2.56
लक्षद्वीप द्वीपसमूह	1	0.81
अंडमान द्वीपसमूह	24	0.96
निकोबार द्वीपसमूह	8	0.97

मंत्रालय अपने संस्थानों के माध्यम से राज्य सरकारों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों को तटीय अपक्षरण के जोखिम से निपटने संबंधी तकनीकी समाधान एवं परामर्श भी प्रदान कर रहा है।

*****